



वास्तविक शिक्षा का स्वरूप

परंपरागत रूप से मनुष्य को प्राप्त होने वाले ज्ञान और संस्कारों को शिक्षा कहते हैं। साथ ही इसे अगली पीढ़ी को स्थानांतरित करना भी शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया होती है। अर्थात् शिक्षा कर्म के साथ क्रिया भी होती है। हालाँकि अभी तक हमने सिर्फ शिक्षा और उसकी प्रक्रिया के संबंध में बात की है परंतु यह नबिंध वास्तविक शिक्षा वषिय वस्तु पर केंद्रित है। शिक्षा के साथ वास्तविक शब्द को जोड़ना इसे वशेष अर्थ प्रदान करता है। वास्तविक शिक्षा इस बात पर जोर देती है कि पाठ्यक्रम एवं उसकी प्रचलित वधियों से इतर शिक्षा क्या है?

शिक्षा की महत्ता प्रत्येक देशकाल एवं परस्थितियों के लिये उतनी ही आवश्यक रही है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य, लक्ष्य आदि पर चर्चा होती रही है एवं सदैव उसके वास्तविक स्वरूप को खोजने का प्रयास किया जाता रहा है। हमारे भारत के ऋषि मुनियों ने **नैसा वदिया या वमिक्तयं** का ज्ञान देकर शिक्षा की महत्ता पर बल दिया था। वास्तविक शिक्षा वही होती है जो मुक्ति का मार्ग प्रदान करे। मुक्ति का अर्थ सामान्यतः संसार से पलायन के संदर्भ में लिया जाता है परंतु वदिया का जोर इस पलायन पर नहीं अपितु धर्म के साथ जीविका उपार्जन एवं धर्म युक्त कर्मों की महत्ता पर है।

अगर व्यक्तिगत स्तर पर देखें तो मुक्ति का अर्थ मनुष्य को वसिृता के अंधकार से निकाल कर स्वयं की सहज अनुभूति से है। सामूहिक स्तर पर इसकी अभिव्यक्ति राष्ट्र एवं लोगों के कल्याण के रूप में होती है। ऐसी स्थिति में ही व्यक्ति एवं समाज अज्ञानता, अभाव और दुख आदि से मुक्ति पाकर परम सुख की प्राप्ति करता है। ऐसी स्थिति सिर्फ और सिर्फ शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। आज भी यह प्रश्न वचिारणीय है कि वर्तमान में वास्तविक शिक्षा का स्वरूप क्या है।

शिक्षा के स्वरूप के संबंध में हम पाते हैं कि यह परंपरागत शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, नूतन शिक्षा, भौतिक शिक्षा आदि प्रकारों में वभिकृत है। समस्त बंधनों से मुक्त करना, जीवन जीने की तैयारी, पीढ़ी दर पीढ़ी संचित ज्ञान के भंडार को आगे प्रेषित करना आदि सभी शिक्षा के उद्देश्यों के अंतर्गत आते हैं। सिर्फ साक्षरता तक सीमति रहने वाली शिक्षा अधूरी मानी जाती है। जो शिक्षा व्यक्ति के उद्देश्य प्राप्त एवं उसकी जरूरतों की पूर्ति में सहायक बने वही वास्तविक शिक्षा होती है।

वास्तविक शिक्षा के तहत महज अक्षर ज्ञान, वभिन्न प्रकार की जानकारी का समावेशन और जीवन यापन करना ही शामिल नहीं है बल्कि यह व्यक्ति के चरित्र, आध्यात्मिक अनुभव और सामूहिक रूप से संस्कृति के विकास का एक समुच्चय है। इंसान में ईश्वरीय गुणों और बाह्य सामर्थ्य के विकास का अवसर वास्तविक शिक्षा के तहत ही प्राप्त होता है। वास्तविक शिक्षा द्वारा लौकिक एवं परलोकिक दोनों प्रकार की उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। व्यक्ति का सर्वांगीण विकास और संतुलित जीवन केवल वास्तविक शिक्षा के उपरान्त ही संभव है।

वास्तविक शिक्षा क्या है इसे परखने के कई मापक हैं जैसे जिसके द्वारा जीवन के उद्देश्य प्राप्त किये जा सकें, जो जीवन मूल्यों एवं मानवीय मूल्यों की कसौटी पर खरा उतर सके, जो व्यक्ति को वनिमृता और सहनशीलता प्रदान करे, जो व्यक्ति के जीवन को संतुलित कर सके और व्यक्ति के साथ समाज के हितों को भी साध सके एवं वदियार्थियों के जीवन को संस्कारवान और अर्थपूर्ण बनाए।

इन मापदंडों को देखने पर हम पाते हैं कि हमारी वर्तमान शिक्षा का स्वरूप इस कसौटी पर खरा नहीं उतर पाता क्योंकि आज की शिक्षा व्यवस्था अधूरी, भयप्रद, वलिसति आधारित, भांगी प्रकृत और स्वार्थ केंद्रित है जो धर्म के सही मूल्यों से दूर करते हुए अनेक विकृतियों को उत्पन्न करते हुए अंततः समाज को नकारात्मक रूप में प्रभावित करती है। आज की इस वर्तमान शिक्षा में परिवर्तन अति आवश्यक है।

आज शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास न होकर केवल रोजगार प्राप्त करने तक सीमति रह गया है। आज की शिक्षा का स्वरूप केवल औपचारिक मात्र ही है जिसमें चारित्रिक संपदा एवं मूल्यों का नतिात अभाव पाया जाता है। वर्तमान शिक्षा अत्यधिक खर्चीली एवं महँगी भी है, जो वदिशी संस्कृतियों से प्रभावित है। यह मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्यों से कहीं दूर है। आज की शिक्षा केवल धनार्जन तक ही सीमति रह गई है एवं समाज में फैली समस्याओं व वभिन्न दुखों के नवारण से कहीं दूर चली गई है। इसका बल गुणात्मक विकास के बजाय मात्रात्मक वसितार पर ही रह गया है। वभिन्न अवसरचनात्मक एवं संसाधनों का अभाव इस समस्या को और गंभीर बनाता है।

आज जरुरत है कि वर्तमान में प्रचलित शिक्षा के स्वरूप को वास्तविक शिक्षा से जोड़ा जाए। अगर इसमें व्याप्त वभिन्न कमियों को दूर कर लिया जाए तो वर्तमान शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तित होकर पूर्ण वास्तविक शिक्षा में बदल सकती है। इसके लिये नमिनलखित बढिओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है-

- आवश्यक अवसरचना का नरिमाण
- राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रभक्तिका समन्वय
- संस्कारों पर वशेष बल

- शक्ति के दायरे को वसितृत करना
- व्यवहारिक शक्ति की ओर ध्यान
- नैतिक शक्ति पर जोर (धर्म एवं मानवीय मूल्य युक्त)
- मूल्य आधारित पाठ्यक्रम
- चरित्र निर्माण

वास्तविक शक्ति वह अवधारणा है जिसके द्वारा वर्तमान शक्ति की कमियों को दूर करते हुए जीवन को पूर्ण और सार्थक बनाया जा सकता है। इसके द्वारा शक्ति क्षेत्र में सुधार कर एक बड़ी क्रांति लाई जा सकती है। शक्ति के निर्माण के समय हमें वास्तविक शक्ति की महत्ता पर जोर देने की आवश्यकता है क्योंकि वास्तविक शक्ति मनुष्य के विकास की अभिव्यक्ति है।

“अज्ञान समस्त विपत्तियों का मूल कारण है। अज्ञानी रहने की अपेक्षा जन्म न लेना ही अच्छा है”

-प्लूटो

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/nature-of-real-education>

